मुख्य परीक्षा

प्रश्न- "समाज एक व्यवस्था है, जिसमें कुल (Whole) उसके भागों के योग से ज्यादा होता है।" इस कथन के सन्दर्भ में नैतिक मूल्यों के ह्रास के विविध कारणों को बताते हुए सामाजिक स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों को विस्तारपूर्वक बताइए।

(250 शब्द)

"Society is a system in which the whole is always greater than the sum of its parts" In this context briefly discuss the various reason of degrading moral values and its effect at the social level . (250 Words)

मॉडल उत्तर

- **नैतिक मूल्यों के ह्रास के विविध कारण:-**
  1. विज्ञान का प्रभाव।
  2. बाजारवाद का उद्भव।
  3. जीवन में जटिलता।
  4. शिक्षा व्यवस्था में नैतिक अवयव का अभाव।
  5. कानून व्यवस्था में नैतिक आचरण पर उचित ध्यान नहीं।
  6. सामाजिक स्तर पर प्रभाव।

वह इच्छाएँ या निर्णय मनमाना नहीं माना जाएगा, जिसमें संविधान व इसकी मौलिक विशेषताएं मौजूद हों। वस्तुत: संविधान की मौलिक विशेषताएं एक राजनीतिक सत्य नहीं है, बल्कि उनका एक ठोस सामाजिक व सांस्कृतिक आधार है। भारत की चिरकालिक सभ्यता व संस्कृति के अवयवों में भी सामाजिक व नैतिक मूल्यों की बात की गई है। इनमें से कुछ ऐसे आधुनिक अवयव भी हैं, जो इस समाज को वापस अंधे युग में जाने से रोकता है।

हाल के समय में हमारे समाज में कुछ ऐसी घटनाओं: जैसे-ऑनर किलिंग, भीड़ द्वारा दण्ड दिया जाना, माननीयों द्वारा दिए गए वक्तव्यों से सामाजिक सौहार्द्र को हानि पहुँची और इनसे नैतिक मूल्यों का भी क्षरण हुआ। अत: अनैतिकता का या नैतिक मूल्यों के क्षरण का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।

वर्तमान समाज विश्वसनीयता के संकट से होते हुए एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है, जहाँ सकारात्मक परिणाम की उम्मीद न्यूनतम हो गई है। आखिर ऐसा क्यों है? क्या अविश्वास शिक्षा व्यवस्था का एक हिस्सा है या विश्वास करने हेतु गंभीर प्रयासों की आवश्यकता है। जैसे-जैसे समाज में सहयोग, समझौता व त्याग रूपी आचरण घटने लगता है, समाज में विकृतियां विकसित होने लगती हैं। अंतर्संबंध व साथ-साथ अंतर्निर्भरता कई कारणों से घटने लगी है। व्यक्ति संकीर्ण हित के लिए सामान्य जनहित की अवहेलना करने लगा है और समाज में प्रत्येक व्यक्ति यह मानना स्वीकार कर चुका है कि कोई भी आचरण बिना निजी हित संभव नहीं है। ईमानदारी या सत्यनिष्ठा विलुप्त प्रजाति की तरह हैं, जिसे किस्से-कहानियों में ढूंढ़ सकते हैं। ऐसे स्वहित से गुथे हुए सामाजिक संबंधों में विश्वसनीयता अति मुश्किल है।

विश्वसनीयता की भावना का घटना व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों स्तरों पर खतरनाक है। यह सभ्यता को 'स्लीपरी स्लोप' (slippery slope) पर बैठा चुका है और इससे सभ्यता किस हद तक नीचे गिरेगी, यह कहना मुश्किल है। अत: सामाजिक विश्वसनीयता में कमी से सामाजिक सौहार्द्र में ह्रास होगा।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हम जितना समाज को देते हैं, समाज हमें उससे कहीं ज्यादा देता है। इसी संदर्भ में कहा गया कि "समाज एक व्यवस्था है, जिसमें कुल (Whole) इसके भागों के योग से ज्यादा होता है।"